HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-III (Mediaeval Indian History)

Unit-III, (Achievements Of Firoj shah Tuglak)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 93

फिरोज शाह तुगलक (1351 से 1388) की उपलब्धियां

(Achievements Of Firoj shah Tuglak)

फिरोज शाह तुगलक, मुहम्मद तुगलक का चचेरा भाई एवं सिपहसालार रजब का पुत्र था । इसकी माँ 'बीबी जैला राजपूत सरदार रणमल की पुत्री थी। मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद 20 मार्च 1351 को फिरोज तुगलक का राज्याभिषेक थट्टा के नज़दीक हुआ। पुनः फिरोज का राज्याभिषेक दिल्ली में अगस्त 1351 में हुआ । सुल्तान बनने के बाद फिरोज तुगलक ने दिल्ली सल्तनत से अलग हुए अपने प्रदेशों को पुनः जीतने के अभियान के अन्तर्गत बंगाल एवं सिंध पर आक्रमण किया । बंगाल को जीतने के लिए सुल्तान ने 1353 में आक्रमण किया। उस समय शम्सुद्दीन इलियास वहाँ का शासक था। इसने इकदाला के किले में शरण ले रखी थी, सुल्तान फिरोज अन्ततः किले पर अधिकार करने में असफल होकर 1355 में वापस दिल्ली आ गया । पुनः बंगाल पर अधिकार करने के प्रयास के अन्तर्गत 1359 फिरोज तुगलक ने वहां के तत्कालीन शासक शमसुद्दीन के पुत्र सिकन्दरशाह पर आक्रमण किया। पर एक बार फिर सुल्तान असफल होकर वापस आ गया।

लगभग 1360 में सुल्तान फिरोज ने जाजनगर (उड़ीसा) पर आक्रमण कर वहां से शासक भानुदेव तृतीय को परास्त कर पुरी के जगन्नाथ मंदिर को ध्वस्त किया। 1361 में फिरोज ने नगरकोट पर आक्रमण कर वहा के शासक को परास्त कर प्रसिद्ध ज्वालामुखी के मंदिर' को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया । 1362 में सुल्तान फिरोज ने सिंध पर आक्रमण किया। यहां के जाबबाबनियों से लड़ती हुई सुल्तान की सेना लगभग 6 महीने तक रन के रेगिस्तान में फंसी रही, कालान्तर में जाबबाबनियों ने सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर वार्षिक कर लिया और देने पर सहमत हो गये।

इन साधारण विजयों के अतिरिक्त फिरोज के नाम कोई बड़ी सफलता नहीं जुड़ी । उसने दक्षिण में स्वतन्त्र हुए राज्य विजयनगर, बहमनी एवं मथुरा को पुनः जीतने का कोई प्रयास नहीं किया । इस प्रकार कहा जा सकता है कि सुल्तान फिरोज तुगलक ने अपने शासन काल में कोई भी सैनिक अभियान साम्राज्य विस्तार के लिए नहीं किया और जो भी अभियान उसने किया यह मात्र साम्राज्य को बचाये रखने के लिए किया । सुल्तान फिरोज तुगलक की 1388 के सितम्बर महीने में मृत्यु हो गई।

राजस्व व्यवस्था के अन्तर्गत फिरोज ने अपने शासन काल में 24 कष्टदायक करों को समाप्त कर केवल 4 कर खराज(लगान) खुम्स (युद्ध में लूट का माल) जजिया एवं 'जकात को वसूल करने का आदेश दिया । उलेमाओं के आदेश पर सुल्तान ने एक नया कर सिंचाई कर भी लगाया, जो उपज का 1/10 भाग वसूला जाता था।

संभवत: फिरोज तुगलक के शासन काल में लगान उपज का (1/5 से 1/3 भाग होता था । सुल्तान ने सिंचाई की सुविधा के लिए 5 बड़ी नहरे --यमुना नदी से हिसार तक 150 मिल लम्बी, सतलज से घग्गर नदी तक 36 मील लम्बी, सिरमौर की पहाड़ी से लेकर हांसी तक, घग्घर से फिरोजाबाद तक एवं यमुना में फिरोजावाद तक का निर्माण कराया। इसने लगभग 1200 फलों के बाग लगावाये ।

नगर एवं सार्वजनिक निर्माण कार्यों के अन्तर्गत सुल्तान ने लगभग 300 नये नगरों की स्थापना की। इनमें से हिसार, फिरोजाबाद, (दिल्ली), फतेहाबाद, जयपुर, फिरोजपुर आदि प्रमुख थे। इन नगरों में यमुना नदी के किनारे बसाया गया फिरोजाबाद सुल्तान को सर्वाधिक प्रिय था। इसके शासन काल में फैजाबाद एवं मेरठ के दो स्तंभालेख को लाकर दिल्ली में स्थापित किया गया। अपने कल्याणकारी कार्यों के अन्तर्गत फिरोज ने एक दफ्तर एवं मुस्लिम अनाथ स्त्रियों विधवाओं एवं लड़कियों की सहायता हेतु एक ने दीवान-ए-खैरात नामक विभाग की स्थापना की।

फिरोज के शासन काल में दासो की संख्या लगभग 180000 पहुँच गई थी। उनकी देखभाल हेतु सुल्तान ने दीवान ए बंदगान की स्थापना की। सैन्य व्यवस्था के अन्तर्गत फिरोज ने सैनिकों को पुनः जागीर के रूप में वेतन देना प्रारम्भ कर दिया । इसने सैन्य पदों को वंशानुगत बना दिया। इससे सैनिको की योग्यता की जांच पर असर पड़ा । कुछ समय बाद इसका भयानक परिणाम सामने आया । फिरोज तुगलक को कुछ इतिहासकार धर्मांध एवं असहिष्णु शासक मानते हैं । सम्भवतः दिल्ली सल्तनत का यह प्रथम सुल्तान था जिसने इस्लामी नियम का कड़ाई से पालन करते हुए उलेमा वर्ग को प्रशासनिक कार्यों मे महत्व दिया । यह कट्टर सुन्नी समर्थक मुसलमान था इसने हिन्दुओं को (जिम्मी (इस्लाम स्वीकार न करने वाले) कहा और हिन्दू ब्राह्मणों पर जजिया कर लगाया।

शिक्षा प्रसार के क्षेत्र सुल्तान ने अनेक मकतब एवं मदरसों (लगभग 13) की स्थापना करवायी । इसने जियाउद्दीन बरनी एवं शम्स-ए-सिराज अफीफ को अपना संरक्षण प्रदान किया। बरनी ने फतवा-ए-जहांदारी तथा तारीख-ए-फिरोज शाही (बरनी) की रचना की। फिरोज़ ने अपनी आत्मकथा 'फुतुहात-ए-फिरोजशाही, की रचना की। किसी अज्ञात विद्वान ने 'सीरत-ए-फिरोज शाही की रचना की, फिरोज ने ज्वालामुखी मंदिर के पुस्तकालय से लूटे गये 1300 ग्रंथों में से कुछ का फारसी में विद्वान् अपाउद्दीन द्वारा दिलायते-फिरोजशाही नाम से अनुवाद करवाया ।

फिरोज तुगलक ने मुद्राव्यवस्था के अन्तर्गत बड़ी संख्या में ताबा एवं चांदी के मिश्रण से निर्मित सिक्के जारी करवाये जिसे सम्भवतः अद्धा एवं बिख कहा जाता था।

Thanks 👍👍👍👍👍👍👍👍👍👍👍